Rigveda ओ३म् AUM Yajurveda
Samaveda Atharvaveda

# वेदाङ्ग
# (Vedang)
( KNOWLEDGE FROM THE VEDAS )

आर्य प्रतिनिधि सभा फीजी - प्रचार कमीटी
Arya Pratinidhi Sabha Fiji
P.O. Box 4245, Samabula.
Phone / Fax 386044

अक्टूबर - दिसम्बर प्रकाशन १९९९
अक २३

# सस्कार

*पिछले अक से आगे*

## (९) राष्ट्रभृत होम

गृहस्थाश्रम में प्रविष्ट होते ही नवदम्पती पर अनेक जिम्मेवारियां आ जाती है। हर गृहस्थ का कर्त्तव्य है कि वह अपने राष्ट्र का भरण-पोषण करे, अपने राष्ट्र को दृढ़ एवं शक्तिशाली वनाए। हमें अपने राष्ट्र को हर प्रकार से उन्नत करना है, अत: वे राष्ट्रभृत होम करते हैं। इन मन्त्रों में याचना की गई है कि ये दम्पति समाज में ब्राह्म-शक्ति तथा क्षात्र शक्ति की रक्षा करें। ब्राह्म शक्ति मस्तिष्क की शक्ति है, मानसिक तथा आध्यात्मिक-ज्ञान की शक्ति है। क्षात्र शक्ति शारीरिक शक्ति है, आधिभौतिक-वल की शक्ति है। इन्ही दो शक्तियों से समाज टिका रह सकता है।

### जया होम

जीवन में सफल होने के लिए मन्त्रों को बोलकर आहुति दी जाती है।

### अभ्यातान होम

अभ्यातान का अर्थ है - अपनी सब तरह से उन्नति करना अर्थात् अपने शरीर, मन, वुद्धि और आत्मा की शक्तियों को बढ़ाना। अभ्यातान मन्त्रों की प्रार्थना है - *सो मा अवतु अस्मिन् ब्रह्मणि अस्मिन् क्षत्रे* - वह परमात्मा *मा* - मुझे इस ब्राह्मशक्ति और क्षात्रशक्ति के विकास में सुरक्षित करने वाला हो।

इस क्रम में एक सौन्दर्य है। यहां पहले सबके लिए प्रार्थना है और फिर एक व्यक्ति के लिए प्रार्थना है। इस क्रम से यह स्पष्ट है कि व्यक्ति की अपेक्षा राष्ट्र का अधिक महत्त्व है। जहां राष्ट्र की भलाई प्रमुख्य समझी जाती है, वहां राष्ट्रीय भावना की जागृति होकर राष्ट्र फूलता फलता और उन्नति करता है। इसके विपरीत जहां एक व्यक्ति के हाथों में सारी जिम्मेवारी सौंप दी जाती है, वहां राष्ट्रीय स्वतन्त्रता का नाश हो जाता है। यदि राष्ट्र के व्यक्ति हृष्ट-पुष्ट और बलिष्ठ है तो राष्ट्र भी शक्तिशाली बनेगा। अत: राष्ट्र निर्माण के लिए व्यक्ति का विकास परम आवश्यक है। किसी ने कितना सुन्दर कहा है - " यदि प्रत्येक व्यक्ति अपना सुधार कर ले तो राष्ट्र का सुधार होना बहुत सरल है।" एक व्यक्ति यदि केवल राष्ट्र उन्नत्ति की बात सोचता है, अपनी उन्नत्ति की ओर ध्यान नहीं देता तो इसका परिणाम क्या होता है? ऐसे लोग अपनी उन्नति नही कर पाते तथा पीछे रह जाते है।

दूसरी ओर जब व्यक्ति केवल अपनी ही उन्नत्ति की बात सोचता है, राष्ट्र की ओर से आँख वन्द कर लेता है, तब व्यक्तिगत स्वार्थ के कारण देश में अनाचार, भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, चोरबाजारी, लालच की भावना आदि बुराइयां पनपती है। तब श्रेष्ठ मार्ग क्या है? मध्य मार्ग ही श्रेष्ठ मार्ग है। जो व्यक्ति राष्ट्रीय उन्नत्ति और अपनी उन्नत्ति - इन दोनों को ही साथ रखता है, ससार में उसी की जय और विजय होती है। इसीलिए जया होम इन दोनों यज्ञों के बीच में रखा गया है।

## (१०) सन्तान सम्बन्धि आहुतियाँ

इस होम के पशचात् आठ घी की आहुति दी जाती है। इन मन्त्रों की मुख्य भावना है - (१). पत्नी उत्तम पुत्रों वाली हो, (२) यह स्त्री पुत्र -सम्वन्धि दु:ख को प्राप्त न हो, (३) इस की गोद कभी सन्तान से रहित न हो, (४) इस की सन्तान लम्बी आयु को प्राप्त करे जिससे यह स्त्री पुत्र सम्वन्धि आनन्द को प्राप्त करे, (५) ईश्वर की कृपा से तुम्हारे घर में रात्रि में कोई दु:ख देनेवाला शब्द सुनाई न दे।

## (११) पाणि (हाथ) ग्राहण - पति के कर्त्तव्य

यहां से विवाह की मुख्य क्रियाओं का आरम्भ होता है। पति, पत्नी के दाहिने हाथ को ग्राहण करके छह मन्त्र बोलता है। इन मन्त्रों की भावनाएं मननीय हैं -

**ओं गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्या जरदष्टिर्यथास:। भगो अर्यमा सविता पुरन्धिर्मह्यं त्वादुर्गार्हपत्याय देवा:॥** ऋ. १०।८५।३६

हे सुन्दर अंग वाली! ऐश्वर्य तथा सुसन्तान आदि सौभाग्य की वृद्धि के लिए मैं तेरे हाथ को ग्राहण करता हूं। तू मेरे साथ वृद्ध अवस्था तक सुखपूर्वक जीवन व्यतीत कर।

**इसी प्रकार पत्नी कहे - हे वीर! मैं भी सौभाग्य की वृद्धि के लिए आपका हाथ ग्राहण करती हूं। आप मेरे साथ वृद्ध अवस्था तक प्रसन्न और अनुकूल रहिए।**

सकल ऐश्वर्यों के स्वामी, न्यायकारी, सब जगत् के उत्पत्ति एव धारणकर्ता परमात्मा और सभा-मण्डप में बैठे हुए विद्वान् जनों ने गृहस्थ आश्रम के कर्मों के अनुष्ठान के लिए तुम्हें मुझे सौपा है। आज से मैं आपकी हुई और आप मेरे हो चुके हैं।

**भगस्ते हस्तमग्रहीत् सविता हस्तमग्रहीत् । पत्नी त्वमसि धर्मणाऽहं गृहपतिस्तव॥** अथर्व. १४।१।५१

हे प्रिये! ऐश्वर्यशाली, सन्तान उत्पन्न करने की शक्ति से युक्त तथा धर्म मार्ग में प्रेरक मैं तुम्हारा हाथ पकड़ रहा हूं। तू धर्म से मेरी पत्नी है और मैं धर्म से तेरा पति हूं। हम दोनों मिलकर गृहकार्यों को सिद्ध करें।

**ममेयमस्तु पोष्या मह्यं त्वादाद् बृहस्पति:। मया पत्या प्रजावति स जीव शरद: शतम्॥** अथर्व. १४।१।५२

हे प्रिये! सब जगत् पालनकर्ता परमात्मा ने तुम्हें मुझे प्रदान किया है। मैं अपने इस कर्त्तव्य को कभी नहीं भूलूंगा, कि मुझे न्यायपूर्वक धन उपार्जन करते हुए तेरा भरण-पोषण करना है। हे प्राजावति! तू मेरे साथ सौ वर्ष पर्यन्त सुखमय जीवन को धारण कर।

**त्वष्टा वासो व्यदधाच्छुभे कं बृहस्पते: प्रशिषा कवीनाम्।**
**तेनेमा नारीं सविता भगश्च सूर्यामिव परि धत्ता प्रजया॥** अथर्व. १४।२।५३

हे देवी! भोजन-सामग्री के साथ मैं अच्छे कारीगरों द्वारा निर्मित सुखद वस्त्र एव आभूषण भी तुम्हें प्रदान करूंगा। ऐश्वर्यशाली, सब जगत् उत्पादक परमात्मा, सूर्य की किरणों के समान कान्तिवाली तुझे, पुत्रों से शोभायुक्त करे।

**इन्द्राग्नी द्यावापृथिवी मातरिश्वा मित्रावरुणा भगो अश्विनोभा । बृहस्पतिर्मरुतो ब्रह्म सोम इमां नारीं प्रजया वर्धयन्तु॥** अथर्व. १४।१।५५

हे मेरे सम्बन्धी लोगों! जैसे बिजली और अग्नि, सूर्य और धरती, हवा, प्राण, सुख की समाग्री, सच्चा वैद्य (Doctor) और सत्य उपदेशक, राजा, विद्वान्, लोग, परमात्मा, वेदज्ञान, जड़ी-बूटियाँ, इस नारी को सन्तान से बढ़ाते है, वैसे ही आप भी अपने आशीर्वाद और मङ्गल - कामनाओं से इसे बढ़ाया करो। मैं भी सन्तान आदि के द्वारा इसे सदा बढ़ाया करूँगा।

**अहं विष्यामि मयि रूपमस्या वेददित्पश्यन्मनस: कुलायम्।**
**न स्तेयमद्मि मनसोदमुच्ये स्वयं श्रथ्नानो वरुणस्य पाशान्॥** अथर्व. १४।१।५७

हे देवी! मैं कुल की वृद्धि को देखता हुआ इस तेरे रूप को प्रीति से प्राप्त और इस में प्रेम से व्याप्त होता हूँ। इसी प्रकार तू भी मुझ में व्याप्त हो। मैं चोरी-चोरी अकेला कभी भी पदार्थों का भोग नहीं करूंगा, इस भावना को भी कभी मन के अन्दर आने नहीं दूंगा। मैं अपने पूरे बल से, दुष्ट लोगों से तेरी रक्षा करूंगा।

*शेष अगले अक मे*